सूचना

ब्र.कु. ऊषा बहन, मुम्बई
लौकिक जन्म: 1937 (73 वर्ष)
अलौकिक जन्म: 1960

हम सबकी अति स्नेही, सदा बेहद सेवाओं के उमंग-उत्साह में रहने वाली, प्यारे बापदादा और दादियों की अति प्रिय, मुम्बई के रमेश भाई जी की विशेष सहयोगी, राइट हैण्ड ऊषा बहन जी का कुछ समय से स्वास्थ्य ठीक नहीं था। 23 सितम्बर 2010 रात्रि 10 बजे आप पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद में विश्रामी हुई।

आप प्रतिभाशाली व्यक्तित्व की धनी रमेश भाई जी के साथ पवित्र युगलमूर्त रूप में रहते ब्रह्माकुमारी शिक्षिका एवं निर्देशिका थी। साकार में मात-पिता की डायरेक्ट पालना में पली, देश-विदेश में अनेक आत्माओं की सेवा करती रही। आप कला एवं संस्कृति प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका थी। आपके मार्गदर्शन में मुम्बई गामदेवी तथा दादर सेवाकेन्द्रों का विधिवत् संचालन होता रहा। लौकिक-अलौकिक का अद्भुत बैलेन्स रखते हुए लगभग 48 वर्ष आपने बाबा की अथक सेवायें की। ऐसी महान विभूति को ज्ञानामृत परिवार स्नेह भरी हार्दिक श्रद्धांजली अर्पित करता है।

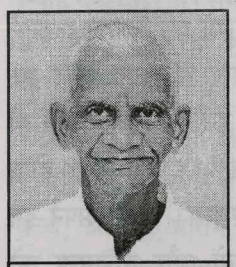

ब्र.कु. हर्षित काका (69 वर्ष)
जन्मतिथि: 4-11-1941
समर्पित वर्ष: 1981

प्यारे बापदादा के अति स्नेही, मधुबन बेहद यज्ञ में हड्डी सेवा करने वाले, सर्व के स्नेही हर्षित काका ने पिछले 30 वर्षों से समर्पित रूप में भोलानाथ के भण्डारे में सेवायें दी। आपकी लौकिक युगल नडियाद सेवाकेन्द्र पर अपनी सेवायें दे रही हैं। हर्षित काका की कुछ समय से तबीयत ठीक नहीं थी इसलिए नडियाद में ही ट्रीटमेन्ट ले रहे थे। दिनांक 23 सितंबर, 2010 को सायं 7 बजे आप पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोदी में चले गये। ज्ञानामृत परिवार ऐसे अथक सेवाधारी भ्राता जी को स्नेह भरी हार्दिक श्रद्धांजली अर्पित करता है।

विश्व का अनोखा दरबार

मैं उत्तर प्रदेश में चार और कोलकाता में एक पैथोलोजी सेन्टर, एक पैरामेडिकल सेन्टर, एक प्रेस, मीडिया की सेवा तथा आशा सोसायटी संचालित करता हूँ। इतना अधिक काम होने के कारण मुझे गुस्सा आ जाता था। मन चंचल और बेचैन रहता था। चाहता था कि दस दिन के लिए कहीं दूर चला जाऊँ पर इतनी जिम्मेदारी थी कि यह असंभव था। एक दिन अपने दोस्त के यहाँ ज्ञानामृत पत्रिका मिली। मैंने घर लाकर पढ़ी और दूसरे ही दिन जा पहुँचा प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में। वहाँ का वातावरण देखकर मन को बहुत सुकून मिला। मुझे बहनों ने सात दिन का कोर्स करवाया। कोर्स करते हुए लग रहा था कि यहाँ सभी लोग मुझे बहुत पहले से जानते हैं। काम तो आज भी वही है पर अब मुझे अपने पर कंट्रोलिंग पावर मिल गई है। ज्ञानामृत पढ़ने से क्रोध सहजता से छूटता जा रहा है और सच्चाई तथा पवित्रता की प्राप्ति होती जा रही है। मुझे लग रहा है कि विश्व के इस अनोखे दरबार की खोज मुझे बहुत पहले से थी।

– डॉ.बेचन प्रसाद खरवार, मऊ